सादि अणादी धुवअद्धुवो य बंधो दु कम्मछक्कस्स ।
तदियो सादि य सेसो, अणादि धुवसेसगो आऊ ॥122॥

◎अन्वयार्थ – (कम्मछक्कस्स) छह कर्मों का (बंधो दु) प्रकृतिबन्ध (सादि अणादी धुव अद्धुवो य) सादि, अनादि, ध्रुव, अधुवरूप चारों प्रकार का है।

◎(तदियो) तीसरे अर्थात् वेदनीय का बन्ध (सादि य सेसो) सादि के बिना तीन प्रकार का होता है ।

◎(आऊ) आयुकर्म का (अणादि-धुवसेसगो) अनादि और ध्रुव के बिना शेष अर्थात् सादि और अध्रुवबन्ध ही होता है ॥122॥

www.JainKosh.org

प्रकृति बन्ध

- सादि
- अनादि
- ध्रुव
- अध्रुव

सादी अबंधबंधे, सेढि अणारूढगे अणादी हु ।
अभव्वसिद्धम्हि धुवो, भवसिद्धे अद्धुवो बंधो ॥123॥

◎अन्वयार्थ – (अबन्धबन्धे) अबन्ध होकर बन्ध होने पर (सादी) सादि कहते हैं ।

◎(सेढि अणारूढगे) जो श्रेणि पर नहीं चढ़ा उसके (अणादी हु) अनादि बन्ध है।

◎(अभव्वसिद्धम्मि) अभव्य-सिद्ध जीवों में (धुवो) ध्रुवबन्ध होता है ।

◎(भवसिद्धे) भव्यसिद्धों में (अद्धुवो बंधो) अध्रुव बंध है ॥123॥

www.JainKosh.org

सादि बन्ध

- जिस प्रकृति का बन्ध किसी विशिष्ट काल में प्रारंभ हुआ, वह सादि बन्ध है ।

अनादि बन्ध

- जिस प्रकृति का बन्ध अनादि से ही चला आ रहा है, वह अनादि बन्ध है ।

ध्रुव बन्ध

- जिस प्रकृति का बन्ध नष्ट नहीं होता, वह ध्रुव बन्ध है । यह अभव्य जीव की अपेक्षा कहा जाता है ।

अध्रुव बन्ध

- जिस प्रकृति का बन्ध किसी विशिष्ट समय समाप्त होता है वह अध्रुव बन्ध है ।

www.JainKosh.org

ज्ञानावरण कर्म

अनादि बन्ध

✓

क्योंकि अनादि काल से ही बन्ध चला आ रहा है ।

सादि बन्ध

✓

क्योंकि उपशांत मोह में बंध बंद होकर उपशम श्रेणी से उतरते समय सूक्ष्म-सांपराय में पुनः बंध प्रारंभ होता है, तब इसका बन्ध सादि हुआ ।

ध्रुव बन्ध

✓

क्योंकि अभव्य जीव के इस बन्ध का कभी अभाव नहीं होता ।

अध्रुव बन्ध

✓

क्योंकि भव्य जीव के दसवें गुणस्थान के अंतिम समय में इस बन्ध अभाव हो जाता है ।

ainK

ज्ञानावरण कर्म

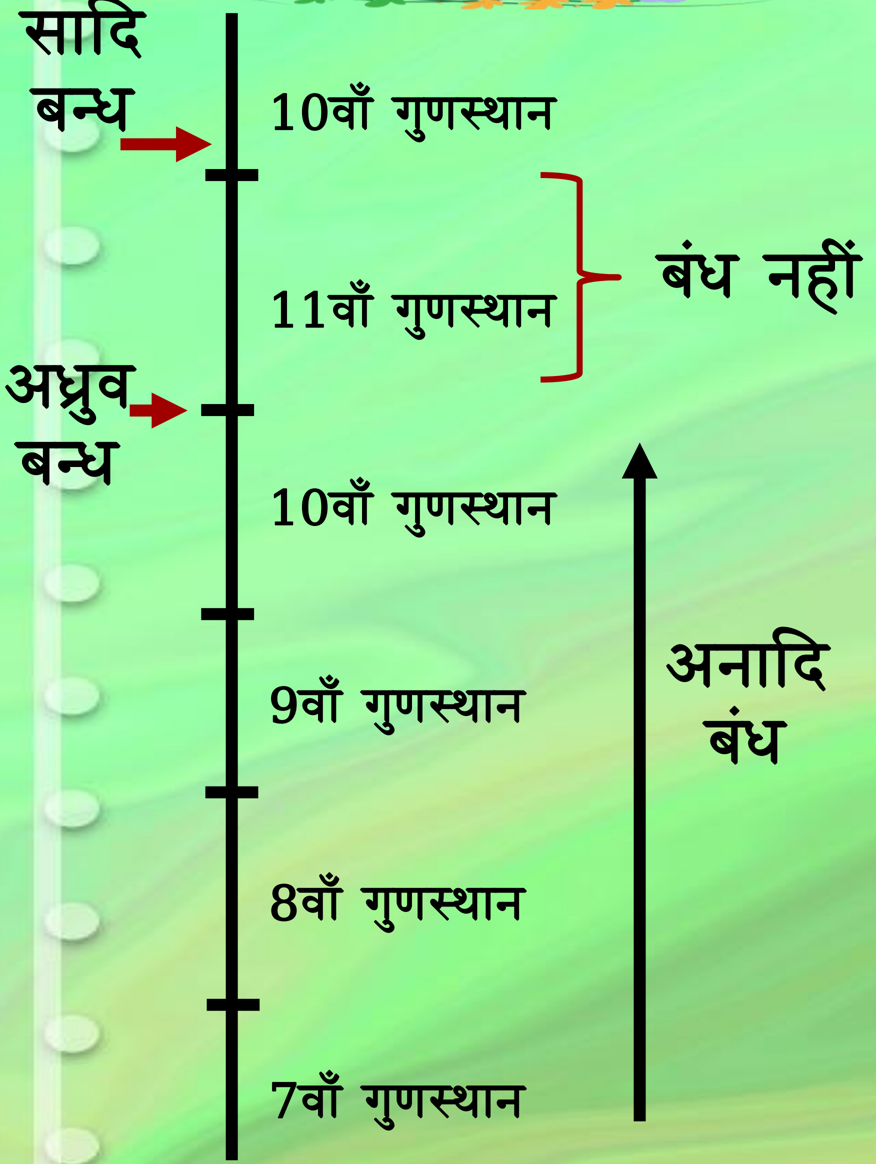

इसी प्रकार दर्शनावरण, अंतराय, नाम, गोत्र में जानना चाहिए ।

इसी प्रकार मोहनीय में जानना चाहिए । परन्तु -

1) इसका अध्रुव बन्ध 9वें गुणस्थान के अंतिम समय में जानना चाहिए ।

2) इसका सादि बन्ध (उपशम श्रेणी अवरोहक) 9वें गुणस्थान के प्रथम समय में जानना चाहिए ।

वेदनीय कर्म

अनादि, ध्रुव, अध्रुव बन्ध इसी प्रकार जानना ।

परन्तु सादि बन्ध नहीं है ।

क्योंकि वेदनीय का बन्ध बंद होकर पुनः प्रारंभ नहीं होता ।

11वे गुणस्थान में भी वेदनीय का बन्ध चलता रहता है ।

आयु कर्म

आयु का बन्ध विशिष्ट समय पर ही प्रारंभ होता है, अतः सादि बन्ध है ।

आयु का बन्ध अंतर्मुहूर्त काल तक होकर नियम से समाप्त हो जाता है, अतः अध्रुव है ।

आयु अनादि काल से ना निरंतर बन्ध रही है, ना ही किसी भी जीव के उसके बन्ध के नाश का अभाव है अतः अनादि और ध्रुव प्रकार नहीं हैं ।

घादितिमिच्छकसाया, भयतेजगुरुदुगणिमिणवण्णचऊ ।
सत्तेतालधुवाणं, चदुधा सेसाणयं तु दुधा ॥124॥

◎अन्वयार्थ – (घादितिमिच्छकसाया) तीन घातिया कर्मों की 19 प्रकृतियाँ, मिथ्यात्व, 16 कषाय (भयतेजगुरुदुग-णिमिणवण्णचऊ) भयद्विक, तैजसद्विक, अगुरुलघुद्विक, निर्माण, वर्णचतुष्क – इन (सत्तेत्तालधुवाणं) सैतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियों का (चदुधा) सादि आदि चारों प्रकार का बन्ध होता है ।

◎(तु) किन्तु (सेसाणयं) शेष प्रकृतियों का (दुधा) सादि और अध्रुव दो प्रकार का बन्ध होता है ॥124॥

www.JainKosh.org

उत्तर प्रकृतियों में सादि आदि बन्ध

1) ध्रुव-बंधी प्रकृतियों का चारों प्रकार का बन्ध है ।

2) अध्रुव-बंधी प्रकृतियों का सादि, अध्रुव दो प्रकार का ही बन्ध है ।

ध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ

जब तक बन्ध-व्युच्छित्ति नहीं होती, तब तक जिन प्रकृतियों का प्रत्येक समय बन्ध होता ही है, उन्हें ध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ कहते हैं ।

ये ध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ हैं —	
ज्ञानावरण	5
दर्शनावरण	9
मोहनीय —	
मिथ्यात्व	1
16 कषाय	16
भय, जुगुप्सा	2
अंतराय	5
नामकर्म —	
तैजस, कार्मण शरीर	2
अगुरुलघु, उपघात	2
निर्माण	1
वर्ण-4	4
कुल ध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ	47

www.Jai

अध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ

प्रतिपक्ष होने के कारण से जिनका बन्ध रुक-रुक कर होता है,

अथवा किसी विशिष्ट कारण से बंध प्रारंभ होता है

बंध लगातार सदैव नहीं होता,

वे अध्रुव प्रकृतियाँ हैं ।

ध्रुव प्रकृतियों को छोड़कर शेष सब प्रकृतियाँ अध्रुव हैं ।

वेदनीय	2
मोहनीय — 7 नोकषाय	7
आयु	4
नामकर्म — शेष (67 – 9)	58
गोत्र	2
कुल अध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ	73

ध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ	+	अध्रुव-बंधी प्रकृतियाँ	=	कुल बन्ध-योग्य
47		73		120

सेसे तित्थाहारं, परघादचउक्क सव्वआऊणि ।
अप्पडिवक्खा सेसा, सप्पडिवक्खा हु बासट्ठी ॥125॥

◎अन्वयार्थ – (सेसे) शेष अध्रुवबन्धी प्रकृतियों में से (तित्थाहारं) तीर्थंकर, आहारकद्विक, (परघादचउक्क) परघात-चतुष्क (सव्व आऊणि) सर्व आयु 4 – ये ग्यारह प्रकृतियाँ (अप्पडिवक्खा) अप्रतिपक्षी हैं तथा (सेसा हु बासट्ठी) शेष 62 प्रकृतियाँ (सप्पडिवक्खा) सप्रतिपक्षी हैं ॥125॥

अध्रुव प्रकृतियाँ (73)

अप्रतिपक्ष	प्रतिपक्षी
(जिनका कोई प्रतिपक्षी नहीं होता)	(जिनका कोई प्रतिपक्षी पाया जा रहा है)
तीर्थंकर	शेष 73 – 11 = 62
आहारक-2	जैसे साता का प्रतिपक्ष असाता है ।
परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, 4 आयु = 11	जब साता का बन्ध चल रहा है, तो असाता का बन्ध नहीं होगा ।

प्रश्न— आयु कर्म भी सप्रतिपक्षी है । उसे अप्रतिपक्षी क्यों कहा है ?

- उत्तर— 1) आयु कर्म का बन्ध प्रारंभ होने पर कोई भी अन्य आयु प्रकृति उसे च्युत नहीं कर सकती है । जबकि प्रतिपक्षी प्रकृतियों में विवक्षित कर्म की प्रतिपक्षी प्रकृति विवक्षित कर्म के बन्ध को एक समय में ही च्युत कर सकती है ।
- जैसे — साता का बन्ध प्रारंभ हुआ । 1 समय के लिए बन्ध होकर ही अगले समय में असाता का बन्ध होने लगा । तो साता का बन्ध असाता द्वारा च्युत करा दिया गया । ऐसा आयु कर्म के साथ नहीं होता है । जैसे किसी ने मनुष्यायु का बन्ध प्रारंभ किया, 1 समय मनुष्य आयु बांधकर अगले समय कोई अन्य आयु का बन्ध प्रारंभ हो जाए ऐसा कभी संभव नहीं, इसलिए आयु कर्म अप्रतिपक्षी है ।
- 2) प्रतिपक्षी प्रकृतियों में विवक्षित कर्म के बन्ध का अभाव हुआ, तो प्रतिपक्षी में से किसी ना किसी कर्म का बन्ध अवश्य होगा, परन्तु आयु में ऐसा नहीं है । जैसे कोई नीच गोत्र बाँध रहा था, अब उसका बन्ध बंद हो गया, तो उच्च गोत्र का बन्ध होगा ही ।
- परंतु कोई तिर्यंच आयु बाँध रहा था, अब उसका बन्ध बंद हो गया तो कोई अन्य आयु बन्धना प्रारंभ हो जाए, ऐसा नहीं होता है ।

www.JainKosh.org

अवरो भिण्णमुहुत्तो, तित्थाहाराण सव्वआऊणं ।
समओ छावट्ठीणं, बंधो तम्हा दुधा सेसा ॥126॥

◎अन्वयार्थ – (तित्थाहाराण सव्वआऊणं) तीर्थंकर, आहारकद्विक और चार आयु – इन सात प्रकृतियों का निरन्तर बंधने का (अवरो) जघन्य काल (भिण्णमुहुत्तो) अन्तर्मुहूर्त है ।

◎(छावट्ठीणं बंधो) 66 प्रकृतियों का जघन्य बंधकाल (समओ) एक समय है । (तम्हा) इसलिए (सेसा) शेष 73 प्रकृतियों का बन्ध (दुधा) दो प्रकार का है ॥126॥

www.JainKosh.org

जघन्य बन्ध-काल

तीर्थंकर, आहारक-2, 4 आयु

अंतर्मुहूर्त

शेष (73 – 7 = 66)

1 समय

www.jainkosh.org

चूंकि इन प्रकृतियों का बन्ध-काल मर्यादित है, इसलिए इनका सादि और अध्रुव बन्ध ही होता है, अनादि और ध्रुव नहीं ।

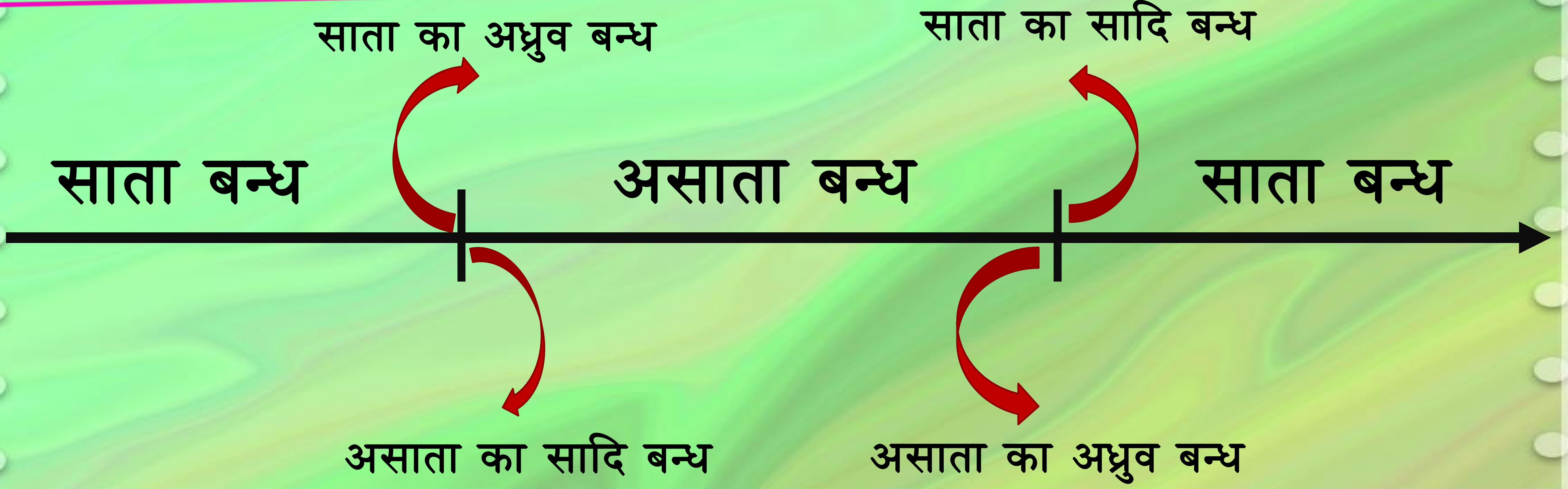

ऐसे ही सब अध्रुव प्रकृतियों में जानना ।

www.JainKosh.org

प्रश्न — वेदनीय का बन्ध अनादि भी कहा था, ध्रुव भी कहा था, सादि नहीं कहा था । परन्तु साता वेदनीय को मात्र अध्रुव और सादि कहा । यह विरुद्ध कथन किस प्रकार संभव है?

उत्तर — वेदनीय मूल प्रकृति है ।

उसके प्रभेदों को गौण करके जब मात्र वेदनीय को देखते हैं, तो वेदनीय का अनादि प्रवाह दिखाई देता है इसलिए वह अनादि है ।

उसी मूल वेदनीय कर्म के बन्ध का अभाव होकर पुनर्बन्ध नहीं होता, इसलिए सादि बन्ध नहीं है ।

अभव्य को कभी वेदनीय कर्म के बन्ध का अभाव नहीं होता, इसलिए ध्रुव है ।

भव्य के वेदनीय कर्म के बन्ध का अभाव हो जाता है, अतः अध्रुव है ।

परन्तु साता वेदनीय के साथ यही सब बातें नहीं हैं ।
इसे निम्न तालिका से समझा जा सकता है –

	वेदनीय	साता	असाता
क्या अनादि से बन्ध हो रहा है ?	✓	×	×
क्या बन्ध बंद होकर पुनः बन्ध हो रहा है ?	×	✓	✓
क्या किसी को बन्ध का कभी अभाव नहीं होता ?	✓	×	×
क्या किसी को बन्ध का अभाव होता है ?	✓	✓	✓

आप देख सकते हैं कि मूल प्रकृति के लिए और प्रभेदों के लिए उत्तर भिन्न-भिन्न हैं ।

इसी कारण से वेदनीय का बन्ध अनादि, अध्रुव और ध्रुव है

परंतु साता या असाता वेदनीय का बन्ध सादि और अध्रुव है ।